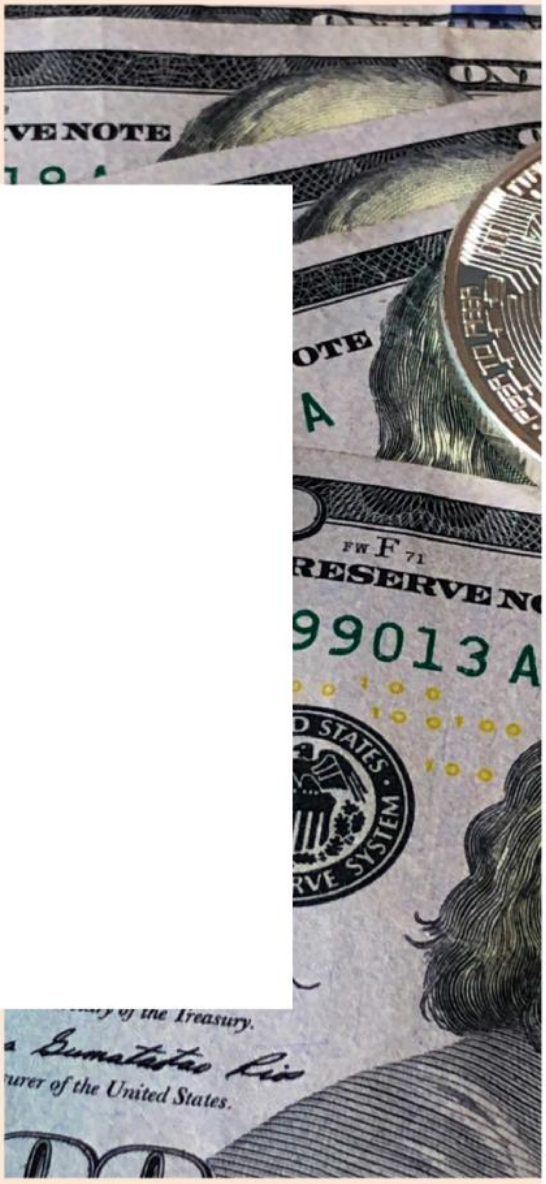
aglasem.com

कक्षा १२ अर्थशास्त्र नोट्स

भुगतान शेष



Key Notes and Important Questions with Answers

इकाई- 9

भुगतान शेष

स्मरणीय बिन्दु

- भुगतान शेष एक वर्ष की अवधि में किसी देश के सामान्य निवासियों और शेष विश्व के बीच समस्त आर्थिक लेन-देनों का एक विस्तृत एवं व्यवस्थित विवरण होता है। इसे विदेशी विनिमय के वार्षिक अन्त: प्रवाह तथा बाह्य प्रवाह का लेखा भी कहा जाता है।

भुगतान शेष के घटक

चालू खाता
इस खाते में वस्तुओं व सेवाओं के निर्यात एवं आयात और चालू अन्तरणों की प्राप्तियों व भुगतान के विवरण दर्ज होते हैं।

पूँजीगत खाता
इस खाते में परिसम्पत्तियों जैसे मुद्रा स्टॉक, बन्ध पत्र आदि अर्थात् किसी अर्थव्यवस्था और शेष विश्व के बीच परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों के स्वामित्व का हस्तांतरण शामिल होते हैं।

चालू खाते की मदें

1. दृश्य मदें (वस्तुओं का आयात-निर्यात)
2. अदृश्य मदें (सेवाओं का व्यापार)
3. एक पक्षीय अन्तरण

पूँजीगत खाते की मद

1. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, पोर्टफोलियों निवेश
2. विदेशी ऋण
3. विदेशी मुद्रा कोष में परिवर्तन

पूँजीगत खाते की मदें सम्पत्ति व दायित्वों में परिवर्तन लाती हैं।

- व्यापार सन्तुलन किसी देश के सामान्य निवासियों ओर शेष विश्व के बीच दृश्य मदों (वस्तुओं) के आयात तथा निर्यात का अन्तर होता है।
- **स्वायत्त सौदों** से अभिप्राय उन आर्थिक लेन देनों से है जिन्हें लाभ के उद्देश्य से किया जाता है। इनका उद्देश्य भुगतान शेष खाते में सन्तुलन बनाए रखना नहीं होता। इन्हे रेखा के ऊपर की मदें कहा जाता है।
- **समायोजन मदें** वे आर्थिक सौदें हैं जिन्हें किसी देश की सरकार द्वारा भुगतान शेष को सन्तुलित बनाए रखने के लिए किया जाता है, इनका उद्देश्य भुगतान शेष खाते के असन्तुलन को दूर करना होता है, इन्हें रेखा के नीचे की मदें भी कहा जाता है।
- **भुगतान शेष में घाटा**- जब स्वायत्त प्राप्तियों का मूल्य, स्वायत्त भुगतान के मूल्य से कम हो जाता है तो भुगतान शेष में घाटा कहते हैं।
- **विनिमय दर** एक देश की करेन्सी का जिस दर पर दूसरे देश की करेन्सी से विनिमय किया जाता है उसे विदेशी विनिमय दर कहते हैं।
- **स्थिर विदेशी विनिमय दर**- वह विदेशी विनिमय दर जिसका निर्धारण या तो देश की सरकार या मौद्रिक अथॉरिटी (केन्द्रीय बैंक) करें उसे स्थिर विदेशी विनिमय दर कहते हैं।
- **लोचशील या नम्य विनिमय दर** का निर्धारण विदेशी विनिमय की मांग तथा पूर्ति की शक्तियों पर निर्भर करता है। विदेशी मुद्रा की मांग तथा नम्य विनिमय दर में विपरीत सम्बन्ध होता है। यदि विनिमय दर ऊँची है तो विदेशी मुद्रा की मांग कम होगी और विलोमशः इसके विपरीत विदेशी विनिमय दर व विदेशी मुद्रा की पूर्ति में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। यदि विदेशी विनिमय दर अधिक है, तो विदेशी मुद्रा की पूर्ति अधिक होगी।
- **विदेशी मुद्रा मांग के स्रोत**
  - (i) विदेशों में वस्तुओं व सेवाएँ खरीदने के लिए
  - (ii) विदेशों में वित्तीय परिसम्पत्तियां (जैसे बांड, शेयर) खरीदने के लिए
  - (iii) विदेशी मुद्राओं के मूल्यों पर सट्टेबाजी के लिए

(iv) विदेशो में प्रत्यक्ष निवेश (जैसे- दुकान, मकान, फैक्टरी खरीदना) के लिए

❑ **विदेशी मुद्रा की पूर्ति के स्रोत**

(i) विदेशियों द्वारा घरेलू बाजार में प्रत्यक्ष (वस्तुओं व सेवाओं की) खरीद

(ii) विदेशियों द्वारा प्रत्यक्ष निवेश

(iii) विदेशी पर्यटकों का हमारे देश में भ्रमण

(iv) विदेशों में रहने वाले अनिवासी भारतीय द्वारा भेजा गया धन या प्रेषणाएँ (एक पक्षीय हस्तातंरण)

(v) वस्तुओं एवं सेवाओं का निर्यात

❑ **नम्य विनिमय दर के गुण**

(i) विदेशी मुद्राओं के भण्डार की आवश्यकता नहीं

(ii) संसाधनों का सर्वोत्तम आबंटन

(iii) भुगतान सन्तुलन खाते में स्वत: समायोजन

(iv) व्यापार ओर पूँजी के आवागमन में आने वाली रूकावटों को दूर करना

❑ **नम्य विनिमय दर के दोष**

(i) विदेशी विनिमय दर में अस्थिरता

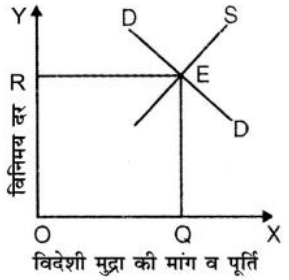
(ii) सट्टेबाजी को बढ़ावा

❑ **नम्य विनिमय दर का निर्धारण**

नम्य विनिमय दर प्रणाली के अन्तर्गत, विदेशी विनिमय दर का निर्धारण बाजार शक्तियों द्वारा होता हैं। दूसरे शब्दों में सन्तुलन विनिमय दर का निर्धारण विदेशी मुद्रा की मांग तथा उसकी पूर्ति द्वारा होता है।

विदेशी विनिमय की मांग तथा विनिमय दर में विपरीत सम्बन्ध होता है। इसलिए

विदेशी विनिमय की मांग वक्र ऋणात्मक ढाल की होती है। विदेशी विनिमय की पूर्ति तथा विनिमय दर में धनात्मक (प्रत्यक्ष) सम्बन्ध होता है। इसलिए विदेशी विनिमय की पूर्ति वक्र धनात्मक ढाल की होती हे। दोनों वक्रों के अत: क्रिया द्वारा सन्तुलन विदेशी विनिमय दर का निर्धारण होता है।



विदेशी मुद्रा की मांग व पूर्ति

- **सन्तुलन विनिमय दर** वह विदेशी विनिमय दर जिस पर विदेशी विनिमय की मांग और पूर्ति दोनों बराबर होते हैं उसे सन्तुलन विदेशी विनिमय दर कहते हैं। चित्र में OR संतुलन विनिमय दर है।
- **प्रबंधित तरणशीलता :** एक ऐसी प्रणाली है, जिसमें केन्द्रीय बैंक विदेशी विनिमय दर के निर्धारण को बाजार शक्तियों पर छोड़ देता है परन्तु समय-समय पर आवश्यकता के अनुसार दर को प्रभावित करने के लिए हस्तक्षेप भी करता है। जब विदेशी विनिमय की दर अत्यधिक निम्न हो केन्द्रीय बैंक विदेशी विनिमय का क्रय करना शुरू कर देता है और जब विदेशी विनिमय की दर अधिक हो तो विदेशी विनिमय का विक्रय शुरू कर देता है।
- **अवमूल्यन:** जब देश की सरकार अथवा केन्द्रीय बैंक घरेलू मुद्रा का बाह्य मूल्य घटाती है तो उसे अवमूल्यन कहते हैं। इससे आयात महंगी तथा निर्यात सस्ती हो जाती है।
- **मुद्रा का अधिमूल्यन:** जब सरकार अथवा केन्द्रीय बैंक घरेलू मुद्रा के बाह्य मूल्य को बढ़ाती है तो मुद्रा का अधिमूल्यन कहलाता हैं। यह स्थिर विनिमय दर में होता हैं।
- **मुद्रा का मूल्यहास:** जब नम्य विनिमय दर में मुद्रा की माँग तथा पूर्ति के

फलस्वरूप घरेलू मुद्रा के मूल्य में विदेशी मुद्रा के मूल्य की अपेक्षा गिरावट आती है तो यह मुद्रा को मूल्यहास कहलाता है।

- **मुद्रा की मूल्यवृद्धि :** जब विनिमय दर में मुद्रा की मांग तथा पूर्ति के फलस्वरूप घरेलू मुद्रा के मूल्य में विदेशी मुद्रा की अपेक्षा बढ़ोतरी होती है तो यह मुद्रा की मूल्यवृद्धि कहलाती है।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

(1 अंक)

प्र. 1. विदेशी विनिमय किसे कहते हैं?

उ. घरेलू मुद्रा के अतिरिक्त कोई भी विदेशी मुद्रा विदेशी विनिमय कहलाती है।

प्र. 2. विदेशी विनिमय दर को परिभाषित कीजिए।

उ. विदेशी विनिमय दर वह दर है जिस पर एक देश की मुद्रा, दूसरे देश की मुद्रा में परिवर्तित हो जाती है।

उदाहरण– 1$ = रु 62

इसका अर्थ है कि IUS$ को लेने के लिए हमें रु. 62 देने पड़ेगें।

प्र. 3. विदेशी विनिमय की माँग के तीन स्रोत लिखिए।

उ. विदेशी विनिमय की माँग के तीन स्रोत निम्न हैं।

1. आयात हेतु
2. अन्तर्राष्ट्रीय ऋणों का भुगतान
3. विदेशों में निवेश

प्र. 4. विदेशी विनिमय की पूर्ति के तीन स्रोत बताइए।

उ.

1. निर्यात
2. शेष विश्व से निवेश
3. शेष विश्व से ऋण

प्र. 5. भुगतान शेष किसे कहते हैं?

उ. एक देश का भुगतान शेष उस देश के निवासियों तथा शेष विश्व के निवासियों के बीच किए गए सभी आर्थिक सौदो का क्रमबद्ध लेखा है जो एक समय अवधि में (एक वर्ष) में किया जाता है।

प्र. 6. व्यापार शेष में घाटे का क्या अर्थ है?

उ. व्यापार शेष में घाटे का यह अर्थ है कि वस्तुओं का आयात वस्तुओं के निर्यात से अधिक है।

प्र. 7. स्थिर विनिमय दर क्या है?

उ. जब विनिमय दर सरकार द्वारा निर्धारित की जाती है।

प्र. 8. भुगतान शेष में घाटे का क्या अर्थ है? समझाइए।

उ. जब स्वायत्त विदेशी विनिमय का भुगतान स्वायत्त विदेशी विनिमय की प्राप्तियों से अधिक होता है तो इनके अंतर को ही भुगतान शेष घाटा कहते है।

प्र. 9. नम्य विनिमय दर को परिभाषित कीजिए।

उ. नम्य विनिमय दर वह दर है जो विदेशी मुद्रा बाजार में माँग तथा पूर्ति शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है।

प्र. 10. प्रबंधित तरणशीलता किसे कहते है?

उ. यह वह प्रणाली है जिसमें विनिमय दर अंतराष्ट्रीय मुद्रा बाजार में पूर्ति तथा मांग की शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है परंतु सरकार अथवा केन्द्रीय बैंक विनिमय दर को प्रंबधित करने के लिए इसमें हस्तक्षेप करती है जब आवश्यकता पड़ती है।

प्र. 11. निम्न सौदों को भारत के भुगतान शेष के चालू खाते में शामिल करेंगे अथवा पूँजीगत खाते में, वर्गीकृत करते हुए कारण भी दीजिए।

(a) विदेशी निवासी द्वारा TISCO कंपनी के शेयरों को खरीद

(b) भारतीय स्कर्ट की जर्मनी में बिक्री

(c) इफोसिस कंपनी द्वारा अमेरिकी बैंक से लिया गया ऋण।

(d) एक भारतीय द्वारा कनाडा में रहने वाले अपने मित्र को भेजी गई मुद्रा

(e) इंग्लैंड में खरीदी गई भूमि।

(f) अमेरिका में रहने वाले संबंधी द्वारा भेजा गया तोहफा

उत्तर

(a) पूँजीगत खाता (b) चालू खाता

(c) पूँजीगत खाता (d) चालू खाता

(e) पूँजीगत खाता (f) चालू खाता

लघु उत्तरीय प्रश्न
3–4 अंक

प्र. 1. भुगतान शेष के चालू खाते की मदों के नाम लिखिए।

उ. 1. वस्तु का निर्यात व आयात

2. सेवाओं का निर्यात व आयात

3. एक पक्षीय हस्तांतरण

प्र. 2. घरेलू मुद्रा के अवमूल्यन तथा मूल्यह्रास में भेद कीजिए।

उ. जब सरकार द्वारा अपनी घरेलू मुद्रा का मूल्य विदेशी मुद्रा के रूप में जानबूझकर गिराया जाता है तो उसे घरेलू मुद्रा का अवमूल्यन कहते हैं। जबकि घरेलू मुद्रा का मूल्यह्रास तब होता है जब इसका मूल्य विदेशी विनिमय बाजार में मांग व पूर्ति में परिवर्तन के कारण, विदेशी मुद्रा की तुलना में गिर जाता है।

प्र. 3. जब विदेशी मुद्रा की कीमत अधिक होती है तो उसकी पूर्ति में भी वृद्धि होती है। समझाइए, ऐसा क्यों?

उ. जब विदेशी मुद्रा की कीमत (देशीय मुद्रा में) बढ़ती है तो निर्यात सस्ता हो जाता

है। अर्थात् विदेशियों को आयात के लिए कम मुद्रा देनी पड़ती है। फलस्वरूप वे अधिक मांग करते है अर्थात् देशी निर्यात बढ़ जाता है जिससे विदेशी मुद्रा की पूर्ति बढ़ जाती है।

प्र. 4. भुगतान संतुलन खाते की स्वायत्त मदें तथा समायोजक मदों में अन्तर स्पष्ट कीजिए तथा प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दीजिए।

उ. स्वायत्त मदें वे आर्थिक सौदे है जिन्हे लाभ के उद्देश्य से किया जाता है। इनका उद्देश्य भुगतान शेष खाते में संतुलन बनाए रखना नहीं होता। इन्हें रेखा के ऊपर की मदें कहा जाता है।

उदाहरण-निर्यात

समायोजक मदें वे आर्थिक सौदे हैं जिन्हें किसी देश की सरकार द्वारा भुगतान शेष को संतुलित बनाए रखने के लिए किया जाता है, इसका उद्देश्य भुगतान शेष खाते के असतुंलन को दूर करना होता है, इन्हें रेखा के नीचे की मदें भी कहा जाता है।

उदाहरणः IMF से उधार

प्र. 5. भुगतान शेष के पूँजी खाते के घटकों के नाम लिखिए।

उ.

1. विदेशों से और विदेशों को ऋण
2. विदेशों द्वारा निवेश और विदेशों में निवेश
3. विदेशी विनिमय कोष में परिवर्तन

प्र. 6. व्यापार शेष में क्या लेन-देन होता है? अनुकूल व्यापार शेष कब हाता है।

उ. व्यापार शेष में केवल वस्तुओं का आयात व निर्यात शामिल होता है। जब वस्तुओं के निर्यात का मूल्य वस्तुओं के आयात के मूल्य से अधिक होता है तो उसे अनकूल व्यापार शेष कहते हैं।

प्र. 7. भारतीय निवेशक विदेशों में उधार देते है। निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

(a) भुगतान संतुलन लेखा के किस उपलेखा और किस पक्ष में यह उधार दर्ज होगा? कारण दीजिए।

(b) इस उधार का बाजार विनियय दर पर प्रभाव समझाइए।

उ.(a) भारतीय निवेशक विदेशों में उधार देते हैं यह भुगतान संतुलन लेखा के पूंजीखाते के नाम (Debit) पक्ष में दर्ज किया जाएगा क्योंकि इससे विदेशी विनिमय परिसम्पतियों में वृद्धि होगी तथा विदेशी विनिमय का बाध्य प्रवाह होगा।

(b) विदेशों में दिया गया उधार विदेशी विनिमय की मांग में वृद्धि करेगा जबकि विदेशी विनिमय की पूर्ति अप्रभावित रहेगी जिससे विदेशी विनिमय दर **बढ जाएगी**।

प्र. 8. ऑफिशियल रिजर्व से आप क्या समझते हैं इसे भुगतान शेष खाते में कैसे सम्मिलित किया जाता है।

उ. रिजर्व बैंक के विदेशी विनियम कोष में परिवर्तन को (ऑफिशियल रिजर्व ट्रांजैक्सन) आधिकारिक आरक्षिक लेन देन कहते हैं। रिजर्व बैंक द्वारा विदेशी मुद्रा कोष में वृद्धि एवं कमी को पूजी खाते में किया जाता है। विदेशी मुद्रा भण्डार में किसी भी एक की कभी-क्रेडिट पक्ष में तथा विदेशी मुद्रा भण्डार में वृद्धि डेबिट पक्ष में दर्ज की जायेगी।